माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन

निरंजन लाल

शोधार्थी, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर (राजस्थान)

डॉ. राजीव रंजन

शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर (राजस्थान)

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर (कक्षा 9–12, आयु वर्ग 14–18 वर्ष) के विद्यार्थियों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक एवं वैश्विक परिवेश में व्यावसायिक विकल्पों की विविधता निरंतर बढ़ रही है, जिससे विद्यार्थियों के समक्ष उपयुक्त व्यवसाय चयन की चुनौती भी बढ़ गई है। ऐसी परिस्थिति में व्यावसायिक निर्देशन सेवाएँ विद्यार्थियों को उनकी अभिरुचि, योग्यता, क्षमता एवं व्यक्तित्व के अनुरूप उचित दिशा प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती हैं। अध्ययन का क्षेत्र कोटपुतली-बहरोड़ एवं नीम का थाना जिले रहे। कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक पद्धति द्वारा किया गया, जिनमें ग्रामीण-शहरी तथा राजकीय-गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित थे। जागरूकता के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं 'टी' परीक्षण के माध्यम से किया गया। विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर विद्यमान है, जहाँ शहरी विद्यार्थियों का औसत स्कोर अधिक पाया गया। इसी प्रकार राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों

के विद्यार्थियों के मध्य भी जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर रहा।

मुख्य शब्द: व्यावसायिक निर्देशन, जागरूकता, माध्यमिक स्तर, ग्रामीण-शहरी अंतर, राजकीय-गैर राजकीय विद्यालय, व्यावसायिक परामर्श।

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्वीकरण, तकनीकी विकास तथा प्रतिस्पर्धात्मक परिवेश में व्यावसायिक विकल्पों की विविधता अत्यधिक बढ़ गई है। विद्यार्थी अब केवल पारंपरिक व्यवसायों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, कला, उद्यमिता, कौशल-आधारित कार्यों तथा डिजिटल क्षेत्रों में भी अवसर उपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति में उचित जानकारी एवं मार्गदर्शन के अभाव में विद्यार्थी भ्रम, असमंजस तथा गलत निर्णय का सामना कर सकते हैं। माध्यमिक स्तर (कक्षा 9–12) वह संवेदनशील चरण है, जहाँ विद्यार्थी विषय चयन, उच्च शिक्षा एवं भविष्य के व्यवसाय के संबंध में प्रारंभिक निर्णय लेते हैं। यदि इस अवस्था में उन्हें व्यवस्थित व्यावसायिक निर्देशन सेवाएँ प्राप्त हों—जैसे व्यावसायिक परामर्श, अभिरुचि परीक्षण, योग्यता परीक्षण, व्यावसायिक मेले, विशेषज्ञ व्याख्यान आदि—तो वे अपनी क्षमता, रुचि एवं व्यक्तित्व के अनुरूप उचित निर्णय ले सकते हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में संसाधनों, सूचना के स्रोतों तथा परामर्श सेवाओं की उपलब्धता में अंतर पाया जाता है। इसी प्रकार राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में भी संरचनात्मक सुविधाओं तथा मार्गदर्शन सेवाओं की स्थिति भिन्न हो सकती है। अतः यह अध्ययन यह ज्ञात करने के लिए किया गया कि क्या इन समूहों के मध्य व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर विद्यमान है।

अध्ययन का औचित्य

प्रस्तुत शोध का औचित्य वर्तमान शैक्षिक एवं सामाजिक परिवेश की आवश्यकताओं से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। आज के वैश्वीकरण एवं तकनीकी विकास के युग में व्यावसायिक के क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं विविध हो गए हैं। विद्यार्थियों के समक्ष पारंपरिक व्यवसायों के अतिरिक्त अनेक नवीन विकल्प उपलब्ध हैं, परंतु उचित मार्गदर्शन के अभाव में वे अपनी रुचि एवं योग्यता के अनुरूप सही निर्णय नहीं ले पाते। परिणामस्वरूप, वे विषय चयन, उच्च शिक्षा एवं व्यवसाय निर्धारण में भ्रमित हो सकते हैं।

माध्यमिक स्तर (कक्षा 9–12) वह अवस्था है, जब विद्यार्थी अपने भविष्य के संबंध में गंभीर निर्णय लेने की प्रक्रिया में प्रवेश करते हैं। इसी स्तर पर विषय चयन, संकाय निर्धारण तथा उच्च शिक्षा की दिशा तय होती है। यदि इस अवस्था में विद्यार्थियों को व्यवस्थित व्यावसायिक निर्देशन सेवाएँ—जैसे अभिरुचि परीक्षण, योग्यता परीक्षण, व्यावसायिक परामर्श, विशेषज्ञ व्याख्यान एवं व्यावसायिक मेले—उपलब्ध हों, तो वे अपनी क्षमता के अनुरूप उचित निर्णय ले सकते हैं।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में सूचना, संसाधनों एवं परामर्श सेवाओं की उपलब्धता में अंतर पाया जाता है। इसी प्रकार राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में भी संरचनात्मक सुविधाओं तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन सेवाओं की स्थिति समान नहीं होती। इस संदर्भ में कोटपुतली-बहरोड़ एवं नीम का थाना जैसे क्षेत्रों में विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि इन क्षेत्रों में ग्रामीण-शहरी तथा राजकीय-गैर राजकीय विद्यालयों का संतुलित स्वरूप उपलब्ध है।

इस अध्ययन का औचित्य निम्न बिंदुओं में स्पष्ट होता है—

1. विद्यार्थियों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति वास्तविक जागरूकता स्तर ज्ञात करना।
2. ग्रामीण-शहरी तथा राजकीय-गैर राजकीय विद्यालयों के मध्य संभावित अंतर का वैज्ञानिक परीक्षण करना।
3. शिक्षा प्रशासन एवं नीति-निर्माताओं को साक्ष्य-आधारित सुझाव प्रदान करना।
4. विद्यालय स्तर पर संगठित व्यावसायिक मार्गदर्शन कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित करना।

अतः यह अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत प्रासंगिक है। इसके निष्कर्ष विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं तथा शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं को सुदृढ़ करने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता ज्ञात करना।
2. राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता ज्ञात करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9–12, आयु वर्ग 14–18 वर्ष) के विद्यार्थियों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। अध्ययन क्षेत्र कोटपुतली-बहरोड़ एवं नीम का थाना जिलों तक सीमित रखा गया तथा कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया, जिससे ग्रामीण-शहरी तथा राजकीय-गैर राजकीय विद्यालयों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके। जागरूकता के मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा 46 अंकों की एक स्वनिर्मित जागरूकता मापनी तैयार की गई, जिसमें प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक निर्धारित किया गया; अधिकतम अंक 46 तथा न्यूनतम 0 रहे, और उच्च अंक अधिक जागरूकता के द्योतक माने गए। संकलित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण के माध्यम से किया गया तथा परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.05 स्तर की सार्थकता पर किया गया।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण

परिकल्पना 1 - ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी - 1

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	टी -मूल्य
ग्रामीण	100	27.84	5.62	6.68*

शहरी	100	32.96	5.10	

(*0.05 स्तर पर सार्थक; df = 198; सारणी टी ≈ 1.97)

विश्लेषण

सारणी–1 के अनुसार ग्रामीण विद्यार्थियों (100) का माध्य 46 में से 27.84 तथा मानक विचलन 5.62 पाया गया, जबकि शहरी विद्यार्थियों (100) का माध्य 32.96 तथा मानक विचलन 5.10 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त टी-मूल्य 6.68 है, जो स्वतंत्रता की डिग्री (df = 198) पर 0.05 स्तर के सारणी मान (लगभग 1.97) से अधिक है। यह परिणाम दर्शाता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की जागरूकता में पाया गया अंतर संयोगवश नहीं है, बल्कि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है। चूँकि शहरी विद्यार्थियों का माध्य स्कोर ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है, अतः यह स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। इस अंतर के संभावित कारणों में शहरी क्षेत्रों में व्यावसायिक संबंधी सूचना के अधिक स्रोत, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, विशेषज्ञ परामर्श सेवाएँ, व्यावसायिक मेले एवं अभिभावकों की शैक्षिक पृष्ठभूमि शामिल हो सकते हैं। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना एवं संसाधनों की सीमित उपलब्धता विद्यार्थियों की जागरूकता को प्रभावित कर सकती है।

अतः प्रथम शून्य परिकल्पना — *"ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है"* — अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि क्षेत्रीय आधार पर व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता में स्पष्ट एवं सार्थक अंतर विद्यमान है।

आरेख : 1

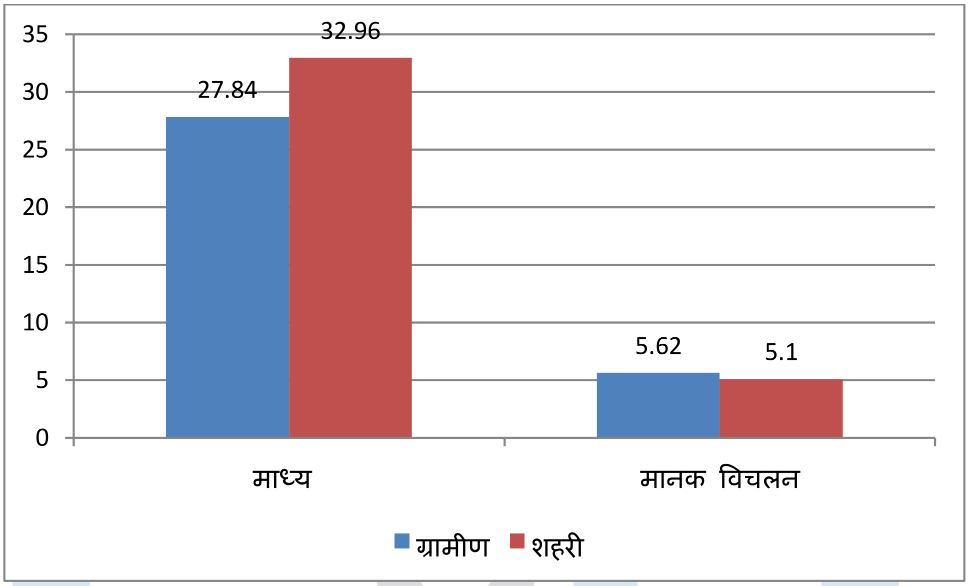

परिकल्पना 2 - राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी - 2

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	टी -मूल्य
राजकीय	100	28.15	5.80	7.45*
गैर राजकीय	100	34.22	4.95	

(*0.05 स्तर पर सार्थक; df = 198; सारणी टी ≈ 1.97)

विश्लेषण

सारणी–2 के अनुसार राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों (100) का माध्य स्कोर 28.15 तथा मानक विचलन 5.80 पाया गया, जबकि गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों (100) का माध्य स्कोर 34.22 तथा मानक विचलन 4.95 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त टी -मूल्य 7.45 है, जो 0.05 स्तर पर सारणी मान (लगभग 1.97) से काफी अधिक है। यह परिणाम इंगित करता है कि राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की जागरूकता में पाया गया अंतर

सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक है। गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का औसत स्कोर अधिक होने से यह स्पष्ट होता है कि इन विद्यालयों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं की उपलब्धता, व्यावसायिक काउंसलिंग गतिविधियाँ तथा सूचना संसाधन अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी हो सकते हैं। इसके विपरीत, राजकीय विद्यालयों में संरचनात्मक एवं संसाधन संबंधी सीमाएँ, प्रशिक्षित व्यावसायिक काउंसलर की कमी तथा जागरूकता कार्यक्रमों की अल्पता विद्यार्थियों के जागरूकता स्तर को प्रभावित कर सकती है।

अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना — *"राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है"*—अस्वीकृत की जाती है।

आरेख : 2

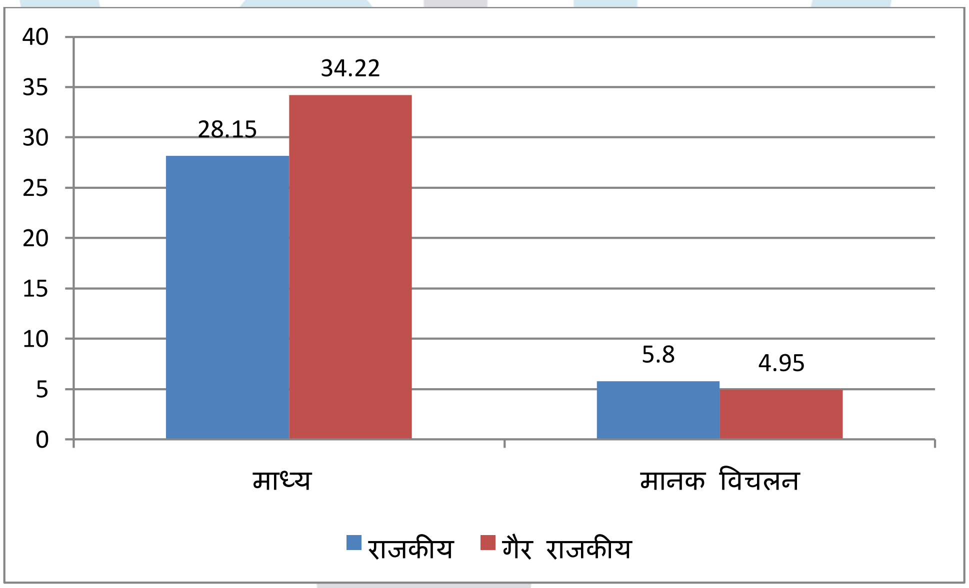

समेकित निष्कर्ष

दोनों सारणियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता क्षेत्रीय (ग्रामीण-शहरी) एवं संस्थागत (राजकीय-गैर राजकीय) आधार पर भिन्न-भिन्न स्तर पर पाई गई। प्राप्त टी -मूल्य सारणी मान से अधिक होने के कारण दोनों परिकल्पनाएँ अस्वीकृत हुईं। अतः अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि क्षेत्रीय एवं संस्थागत कारक विद्यार्थियों की व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के प्रति जागरूकता को प्रभावित करते हैं। परिणामस्वरूप, विशेष रूप से ग्रामीण एवं राजकीय विद्यालयों में संगठित व्यावसायिक परामर्श कार्यक्रमों की आवश्यकता अनुभव की गई। यह

अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं, विद्यालय प्रशासन तथा शिक्षकों के लिए उपयोगी दिशानिर्देश प्रदान करता है, जिससे विद्यार्थियों को समुचित व्यावसायिक मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जा सके और उनके भविष्य निर्माण में सहायता मिल सके।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह सुझाव दिया जाता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं को अधिक सुदृढ़ एवं संगठित रूप में लागू किया जाए। विशेष रूप से ग्रामीण एवं राजकीय विद्यालयों में प्रशिक्षित व्यावसायिक काउंसलर की नियुक्ति, व्यावसायिक निर्देशन कक्ष की स्थापना तथा नियमित व्यावसायिक मार्गदर्शन कार्यक्रमों—जैसे व्यावसायिक मेले, कार्यशालाएँ, विशेषज्ञ व्याख्यान एवं अभिरुचि-योग्यता परीक्षण—का आयोजन किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को विभिन्न व्यावसायिक विकल्पों की अद्यतन एवं प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराने हेतु डिजिटल संसाधनों, ऑनलाइन परामर्श सेवाओं एवं व्यावसायिक सूचना पुस्तिकाओं का उपयोग बढ़ाया जाए। साथ ही, अभिभावकों को भी जागरूकता कार्यक्रमों में सम्मिलित कर उन्हें व्यावसायिक चयन प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार बनाया जाए। शिक्षा विभाग द्वारा व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं को विद्यालयी शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाते हुए आवश्यक संसाधन एवं बजट प्रदान किया जाए, ताकि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हो सकें और वे अपने भविष्य के संबंध में सूचित एवं आत्मविश्वासपूर्ण निर्णय ले सकें।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जे. सी. (2015). *शैक्षिक अनुसंधान का परिचय*। आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
- बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं कान, जे. वी. (2006). *Research in Education* (10th ed.). नई दिल्ली: प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।
- बुच, एम. बी. (Ed.). (1991). *Fourth Survey of Research in Education (1983–88)*. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
- गुप्ता, एस. पी. (2014). *सांख्यिकी के मूल तत्व*। इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
- कपिल, एच. के. (2011). *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी*। आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

- कोठारी, सी. आर. (2004). *Research Methodology: Methods and Techniques* (2nd ed.). नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2006). *Guidance and Counselling Manual*. नई दिल्ली: National Council of Educational Research and Training।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). *National Education Policy 2020*. नई दिल्ली: Ministry of Education, भारत सरकार।
- सुपर, डी. ई. (1957). *The Psychology of Careers*. न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो।
- शारदा, पी. (2012). *Guidance and Counselling in Indian Education*. नई दिल्ली: ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।